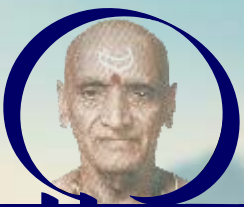

शिव गरिमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई-पत्रिका

वर्ष–2, अंक–7, माह–जुलाई 2024

आशीर्वाद : प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा

प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट, ईंटालीखेड़ा

एक यानी केवल एक

अध्यात्म की यात्रा श्रद्धा से प्रारंभ होकर आनंद के शिखर तक जाती है। हमारी गुरु परंपरा में भी यही सिद्धांत है। अनेक संतों, सिद्धों व साधकों ने कहा है - पानी पीना छान के, गुरु करना जान के। इसका तात्पर्य यही है कि गुरु से दीक्षित होने में जल्दबाजी नहीं करना है। मन में संतोष हो जाए तो ही शिष्यत्व लेना है। यह सत्य है कि जब हम गुरु को अपना सर्वस्व मानकर उनसे साधन हेतु दीक्षा लेते हैं तभी अध्यात्म की यह यात्रा प्रारंभ होती है।

पहला बिंदु जहां से हम आगे चलते हैं वह है श्रद्धा। श्रद्धा यानी तर्क से मुक्ति। कई लोग तर्क को विवेक का पर्याय मान लेते हैं। तर्क मुक्ति का अर्थ है कि हमने गुरु के रूप में स्वयं के आध्यात्मिक व लौकिक जीवन में एक अनुभवी मार्गद्रष्टा स्वीकार लिया है। उनकी वाणी, उनकी सोच, उनके आदेश मेरे लिए ब्रह्म

वाक्य हैं। वही किसी साधक के लिए मंत्र हैं। ऐसी श्रद्धा से ही विश्वास उपजता है। श्रद्धा व विश्वास मिलकर साधन में गहराई लाते हैं। कभी-कभी ऊपरी सतह पर चलने वाले विचारों के कारण या स्वयं साधक की ऊहापोह वाली भावदशा के कारण श्रद्धा व विश्वास में डगमगी सी लग जाती है। इसका एक ही कारण है कि साधक, साधन से विमुख हो रहा हो। जैसे कुएं को एक ही स्थान पर खोदा जाए तो अंततः पानी मिलता ही है वैसे ही सद्गुरु के प्रति एकनिष्ठा से ही जीवन में आध्यात्मिक सुगंध का उद्गम होता है। जो आकर्षण के कारण, प्रतिष्ठा के कारण, अपेक्षाओं की पूर्ति के लोभ में या अन्य किसी ऐसे कारण से यत्र-तत्र भटकते हैं वे स्वयं को ही छल रहे हैं। भटकने से जानकारियां तो हो सकती हैं पर बोध तो असंभव है। और बिना स्वयं का बोध हुए आनंद की झलक कैसे मिल सकती है? इसलिए हमने जिन्हें भी गुरु माना है, जिस भी सद्गुरु ने हमें अपनी छत्रछाया में लिया है उनके प्रति अगाध निष्ठा, अनंत आस्था व अविचलित श्रद्धा होनी ही चाहिए। दूसरे भी आदरणीय हैं पर स्वामी तो एक ही होता है। सम्मान सबका पर व्यवहार अपने सद्गुरु से ही हो तभी यात्रा सधेगी। एकनिष्ठा कोई सिद्धांत या आग्रह नहीं वरन् किसी भी सद्साधक की जीवन शैली बननी चाहिए। तभी अध्यात्म में आगे बढ़ना संभव होगा। ध्यान रहे कि मानव जीवन की सफलता ही स्वयं की खोज और परमानंद की अनुभूति में है। ॥卐॥

आपकी अपनी प्रभु बा

सहज अभिव्यक्ति

संपादकीय

अपने वासुदेव कुटुंब को सद्गुरु राजयोगी प्रभु बा ने शक्तिपात परंपरा के उस अद्भुत प्रवाह से परिचित कराया है जो देवदुर्लभ है। गुरुदेव ने न केवल उस साधन गंगा के दर्शन कराए हैं वरन् गहरी डुबकियां भी लगवा रहे हैं। यों देखा जाए तो आध्यात्मिक जगत में ज्ञान व भक्ति एक होते हुए भी दो अलग-अलग मार्ग दिखते हैं। विगत 500 वर्ष के कालखंड में शास्त्रीय दृष्टि से देखें तो ज्ञान मार्ग में ज्ञानाश्रयी शाखा व प्रेमाश्रयी शाखाएं मिलती हैं। ये सामान्यतः निराकार का अवगाहन है। एक तरह से निराकार शिव-शक्ति की उपासना है। निर्गुण भक्तों ने इस मार्ग का वरण किया है। दूसरी भक्ति शाखा है जिनमें ज्यादातर राम और कृष्ण के स्वरूपों, लीलाओं का प्रेमपूर्वक वर्णन है। यह सगुण उपासना है। इन गूढ़ तत्वों को सद्गुरु प्रभु बा ने ध्यान व नाम जप के द्वारा सरलता से मिश्रित करके अनुकरणीय बना दिया है। जब हम ध्यान करते हैं तो ज्ञानमार्गी होते हैं। यहां ज्ञान का अर्थ शास्त्रीय जानकारी व परंपराओं के इतिहास से न होकर सत्य को जानने के लिए है। यानी परमात्मा को जानना, सद्गुरु को जानना व स्वयं को जानना। इसके लिए भी राजयोगी प्रभु बा ने हमें अपनी गोद यानी आसन देकर अंतर्यात्रा का सहज मार्ग दिखला दिया है। भक्ति मार्ग में जो नवधा भक्ति का उल्लेख आता है इन सबमें समर्पण प्रमुख है। अपने

आराध्य से आंतरिक जुड़ाव ही भक्ति का रसमय प्रवाह है। इसमें याचना नहीं अहोभाव की प्रमुखता है इसलिए गुरुदेव ने सामान्यतः तो अखंड नाम जप में 'ओम् नमो भगवते वासुदेवाय' यह द्वादशाक्षरी मंत्र जपने को कहा है। समय-समय पर 'दिगंबरा दिगंबरा श्रीपाद वल्लभ दिगंबरा'. 'श्री राम जय राम जय जय राम'. 'ओम् नमः शिवाय' आदि मंत्र भी जपने के लिए कहा है। ज्ञान (ध्यान) व भक्ति (नाम जप) ये दो ऐसे पंख है जिनसे आध्यात्मिक आकाश में असीम उड़ान भरते हुए आनंद में, सद्गुरु निश्रा में रहा जा सकता है। हममें से अधिकतर साधक ऐसा करते भी हैं। गुरुदेव यही चाहते हैं कि सब उड़ें, बहुत ऊंचे उड़ें, आनंद से सराबोर होकर जीवन को सार्थक करें। ॥卐॥

– स्वामी गुरुराज

पाथेय-प्रसाद

प्रभु बा का अनुभव

अभाव पर भाव भारी

आज वासुदेव कुटुंब फूला-फला दिख रहा है इसके पीछे एक ही शक्ति है और वह है मेरे प्यारे सद्गुरु की सामर्थ्य । आज विविध स्थानों पर आश्रम हैं जहां साधकों के लिए साधन-सत्संग के लिए उचित व आवश्यक व्यवस्थाएं हैं। साधक जब उनका उपयोग, उपभोग करते हैं तो मुझे तो खुशी होती है पर मेरा मानना है कि मेरे गुरुदेव कितने प्रफुल्लित होते होंगे, यह कल्पना से परे है। आपको बताना चाहती हूं कि शुरू में यह स्थिति नहीं थी। आर्थिक हो या सामाजिक सभी प्रकार के हालात बड़े विकट थे। एक बार मेरे माता-पिता मिलने के लिए मुंबई आए। उस समय हम गिरगांव में रहते थे। सभी साधक मेरे अपने हैं इसलिए आपसे क्या छुपाना? उनको तथा घर वालों को खिलाने के लिए घर में चावल और गेहूं तक नहीं थे। वे चार-पांच दिन रुके तो उन्हें बाजार से पाव और ब्रेड लाकर खिलाए। उन्हें भनक तक नहीं लगने दी कि घर में क्या अभाव का तांडव मचा है। बस उन्हें यही कहा कि यहां का प्रसिद्ध खाद्य पदार्थ है, आप कब आते हो, आपको पाव और ब्रेड खिलाते हैं। कभी और कुछ भी लाए। ऐसी स्थिति थी। जब बड़े

महाराज का साप्ताहिकी करने का आदेश हुआ तब चातुर्मास में चार ही दिन बचे थे। सात जगह साप्ताहिकियां करनी थी। व्यवस्था क्या कर पाते और सही बात तो यह थी कि व्यवस्था थी भी क्या? पांचवीं साप्ताहिकी में जाते-जाते बेणेश्वर धाम में तो केवल आलू उबालकर खाने पड़े।

उस समय प्रवास के लिए एक छोटी और पुरानी कार थी। उससे सारी यात्राएं हुई। कार में मेरे समेत चार-पांच साधक रहते थे। कई बार ऐसी स्थिति बन जाती थी कि या तो गाड़ी में पेट्रोल भरवा लें या भोजन कर लें। हम सजीव थे इसलिए खुद को समझाना फिर भी संभव था पर गाड़ी को कैसे मनाएं? उसमें तो पेट्रोल भरवाना ही होता था। इसके बावजूद भी रास्ते में ईंधन

लेवल जीरो पर आ जाता था, तब नाम जप करते हुए गाड़ी चलाते-चलाते 30-35 किलोमीटर तो चले ही जाते थे।

दत्त मंदिर की स्थापना हो या शिवपुरी का निर्माण, सब में आर्थिक परेशानियां खूब आई। आर्थिक व्यवस्था एक बात थी पर न जाने क्यों ईर्ष्यावश कई अपनों का भी साथ नहीं मिला। साथ की छोड़ो विरोध भी भरपूर हुआ। अन्य अनेक अवसर ऐसे आए जब अभावों से आमना सामना होता रहा। पर इन सारी परिस्थितियों में मेरा दृढ़ मत रहा कि परेशानियां जो भी आयें पर गुरुदेव साथ हैं तो वे हमारा क्या बिगाड़ लेंगी? एक क्षण के लिए भी कभी यह विचार नहीं आया कि भक्ति मार्ग में क्यों कष्ट देखने पड़ रहे हैं? एक बार भी सद्गुरु से शिकायत नहीं रही। जब सारा ही कार्य, सारा ही दायित्व, सारा ही अभियान उनका है तो हम चिंता करके अपने गुरुनिष्ठा पर संदेह कैसे कर सकते हैं? गुरुदेव के प्रति संपूर्ण विश्वास, उनके द्वारा बताए गए कार्यों पर आस्था तथा गुरु परंपरा पर अटूट श्रद्धा ने ही वह समय ठीक से व्यतीत करा दिया। मैं यह भी नहीं कह सकती कि यह परीक्षा थी क्योंकि मेरे गुरुदेव मेरी क्या परीक्षा लेंगे? वह तो पालनहार हैं, सर्वस्व हैं। अपने सद्गुरु के प्रति आस्था ही हमारी परंपरा का सबसे श्रेष्ठ साधन है और आज भी हम इसी मार्ग पर चल रहे हैं। मेरा अनुभव है कि भाव हो तो अभाव कहीं नहीं टिकते।। ॥卐॥

साधिकाओं के लिए विशेष

स्त्री देह के कारण आपकी शारीरिक बनावट ऐसी होती है कि वयस्क होने पर मासिक धर्म, रजो धर्म प्रारंभ होता है। यह एक प्राकृतिक व स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसमें कोई नई बात भी नहीं है। अधिकतर साधिकाएं धार्मिक क्रियाकलाप में इस अवस्था में पूरा ध्यान रखती हैं। स्वास्थ्य विज्ञानी ऐसे समय में विश्राम की सलाह देते हैं पर स्पर्श-अस्पर्श के संबंध में मौन हैं, इसलिए इसके पालन में शिथिलता देखी जाती है।अपने आश्रमों में तथा कार्यक्रमों में इस संबंधी शुचिता पालन पर विशेष जोर है। इसका कारण धार्मिक तो है ही पर हम शक्तिपात परंपरा के अनुयायी हैं इसलिए भी कठोरता से पालन आवश्यक है। इस संबंध में कुछ संकेत हैं -

1. यदि आप आश्रम में किसी कार्यक्रम में आ रहे हैं और उस अवधि में ही मासिक धर्म की संभावित तिथियां हों तो प्रवास को टालें।

2. यदि आप आश्रम के लिए यात्रारत हैं और ऐसा होता है तो आश्रम आने वाले सहयात्रियों को स्पर्श न करें। अपनी यात्रा से वापस लौट जाएं।

3 यदि आश्रम आने के बाद कार्यक्रम के दौरान ऐसी स्थिति बनती है तो तुरंत अपने आपको एकांतिक कर लें। अपने कपड़े, आसन आदि को न छुएं। अपने लिए अलग आवास व्यवस्था के लिए कहें।

4. कोमन बाथरूम आदि का प्रयोग अलग व्यवस्था होने तक न करें। यदि अति आवश्यक है या देरी के कारण उपयोग करना है तो अन्य सह साधिका को सफाई के लिए कहें।

5. जब तक चार दिन पूरे न हों तब तक पेयजल व अन्नपूर्णा व्यवस्था तक न जाएं। पांच दिन बाद ही आप गुरुदेव को स्पर्श किए बिना दर्शन कर सकते हैं।

6. यदि आश्रम में रहने के इतने दिन बाकी न हो तो यथासंभव अवधि पूरी करके जाएं या जाना जरूरी हो तो सहयात्रियों को स्पर्श न करें।

7. यदि जाने के लिए एक ही वाहन है तो आसन आश्रम में छोड़ दें या अन्य वाहन से कोई जा रहे हों तो उन्हें सौंप दें। आप जिनके साथ यात्रा करेंगे उनको भी घर जाकर अपने सभी वस्त्र धोने होंगे।

उक्त व्यवस्था पालनीय है क्योंकि इससे अन्य साधिकाओं को भी असहजता रहती है और यदि भूलवश या लापरवाही से आप गुरुदेव के दर्शन इस अवस्था में कर लेते हैं तो उन्हें शारीरिक कष्ट में डालेंगे। आशा है ये संकेत आपके लिए स्पष्ट मार्गदर्शन करेंगे।

॥卐॥

अद्भुत प्रसंग

जब गुरुदेव फ्रैंचभाषी हुए

बात कई सालों पहले की है जब गुरुदेव राजयोगी प्रभु बा अपने प्रवासी साधकों के साथ पुणे से नासिक होते हुए त्रयंबकेश्वर पहुंचे थे। वहां पर एक चाय की होटल के सामने रुके। साधकों को चाय पिलानी थी। उस होटल वाले का लड़का वही बेंच पर बैठा था लेकिन वह बड़े विचित्र स्वभाव का था। उसका पिता स्वयं परेशान था क्योंकि वह काम धाम तो करता नहीं था और न जाने क्या बोलता रहता था। वह जो बोलता था वह किसी के भी समझ में नहीं आता था। पिता बड़ा परेशान था। युवावस्था में आकर भी लड़का न तो पढ़ाई में रुचिशील था और ना हीं धंधे में। जब हम सब चाय के लिए रुके तब भी वह युवक कुछ बड़बड़ा रहा था। होटल मालिक ने गुरुदेव को देखा तो उसे लगा कि कोई सिद्ध संत हैं। इन्हें इस लड़के की समस्या बतानी चाहिए, क्या पता कोई समाधान निकल आए। उस होटल वाले ने प्रभु बा के पास गाड़ी की खिड़की तक आकर अपने पुत्र की सारी बातें गुरुदेव को बताई और काफी निराशाजन्य दुख भी व्यक्त किया। वह चिंतित था कि यह पागलों की तरह न जाने क्या बोले जाता है और धंधे में रुचि नहीं लेता है। या तो वह बोलता है या बस शून्य में ताकता रहता है, ऐसे में इससे विवाह भी कौन करेगा? गुरुदेव ने उसे देखा और इशारे से पास बुलाया। वह युवक

चुपचाप उठकर गुरुदेव के पास आ गया। प्रणाम किया और खड़ा रहा। गुरुदेव ने उसे कुछ पूछा तो वह कुछ ही देर में किसी अन्य भाषा में धाराप्रवाह बोलने लगा। वह वस्तुत: फ्रेंच भाषा में बात कर रहा था। आश्चर्य था कि वह तो मराठी भाषी परिवार में जन्मा था और कभी ना तो फ्रांस गया, ना फ्रेंच सीखी और ना किसी फ्रेंचभाषा भाषी के संपर्क में आया। फिर यह कैसे उस भाषा में बोलते जाता है? गुरुदेव ने तुरंत समझ लिया कि यह किस भाषा में बात कर रहा है। वह युवक फ्रेंच में कुछ बोलता और गुरुदेव उसे उसका उत्तर मराठी में देते गए। थोड़ी देर यह संवाद चला तो युवक संतुष्ट हो गया और पिता से वादा किया कि वह आज से ही उनके कहे को मानेगा। हम भी मंदिर में दर्शन करने के लिए आगे निकल गए। बाद में हमें गुरुदेव ने बताया कि समर्थ गुरु रामदास की परंपरा में कालांतर में श्रीधर स्वामी हुए थे। उनका एक फ्रांसीसी शिष्य हुआ था। वह अत्यंत जिज्ञासु था किंतु श्रीधर स्वामी के असामयिक देहावसान से वह भटक गया था। उसमें हताशा का भाव तथा योग विद्या पूरी न सीख पाने की निराशा का भाव भर गया था। इस कारण वह उद्विग्न हो जाता था। उस फ्रांसीसी की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा ने इस युवक के शरीर को धारण किया था। इसलिए यह युवक विरक्त सा रहता है तथा फ्रेंच में बात करता है। और अच्छी बात यह हुई कि अब वह उस विचार जाल से निकल करके और सामान्य स्थिति में आ गया है। वह अब सांसारिक धर्म निभाते हुए अध्यात्म में अच्छी गति करेगा। ॥卐॥

सौजन्य : स्वामी शिवानंद जी

साधन-संपदा

उद्बोधन - बाबा महाराज

(परमपूज्य नाना महाराज तराणेकर द्वारा स्थापित मठ के वर्तमान उत्तराधिकारी एवं शक्तिपात परंपरा के अधिकारी व्याख्यायक आदरणीय बाबा महाराज, इन्दौर द्वारा शिवपुरी में प्रभु बा की उपस्थिति में संकल्प दिवस साप्ताहिकी के प्रथम दो दिनों के व्याख्यान का सार रूप)

करीब 50 वर्ष पहले मैंने पहली बार गुलवणी जी महाराज का दर्शन किया था उस समय जो अनुभूति हुई ठीक वैसी अनुभूति आज प्रभु बा के पास बैठकर हो रही है। यहां आने के बाद मैंने देखा ऐसा लगता है कि स्वयं सद्गुरु गुलवणी जी महाराज पुणे से चलकर यहां आ गए हैं। उनके आने से यह तीर्थ क्षेत्र हो गया है। पहले हम सुना करते थे कि लोग दूर-दूर से शिवपुरी में प्रभु बा के पास आते हैं तब यह प्रश्न था कि ऐसा क्या है, इतनी दूर क्यों जाते हैं? यहां आकर समझ में आ गया कि क्यों आते हैं?गुरु गीता में

एक श्रेष्ठ सूत्र है जो भगवान शिव कहते हैं कि गुरु से अधिक कोई नहीं है। यह उनका प्रमाण है। गुरु जहां है वहीं क्षेत्र है। गुरु चरित्र हम सबके लिए मार्गदर्शक ग्रंथ है। एक सूत्र है स्कंद पुराण में

'मंत्र तीर्थ द्विज देवे, देवज्ञ भेषजे गुरो।
या दृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति ता दृशी।

इसी को गुरु चरित्र में रूपांतरित भाषा में व्यक्त किया गया है और बताया गया कि इन पर श्रद्धा से लाभ होता है। गुरु चरित्र भी एक पुराण ही है। जैसे भागवत पुराण के पारायण का लाभ मिलता है वैसा ही गुरु चरित्र के पारायण का है। हम उसे संदर्भ में गुरु चरित्र पर थोड़ी चर्चा करते हैं।

एक शब्द आया है मंत्र। मंत्र तो समूह है, एक अक्षर भी मंत्र हो सकता है। उस पर बिंदी लग जाए तो बीज मंत्र हो जाता है। इसका परिणाम होता है, प्रभाव होता है। नाम संकीर्तन का प्रभाव तो होता ही है। मंत्र के साथ ध्यान हो तो उससे एकाग्रता बढ़ती है।मंत्र, मुद्रा व स्वर तीनों मिलकर लय और नाद पैदा करते हैं। विशेष ऊर्जा उत्पन्न करते हैं। ऐसा मंत्र गुरु की सत्संग से मिलता है और यही मंत्र दीक्षा है।

तीर्थ के अनेक अर्थ हैं। सामान्यतः पूजा में काम आया जल तीर्थ है। पवित्र स्थान भी तीर्थ हैं। माता पिता भी तीर्थ हैं। गुरु भी तीर्थ है। तीर्थ का जल जो अभिषेक से सिक्त है उसमें शंख का संगृहीत जल मिलने से विशेष प्रभावशाली हो जाता है। ऐसा तीर्थ शुद्धिकारक होता है।

द्विज यानी दूसरा जन्म होना। इस शब्द के भी अनेक अर्थ हैं जैसे पक्षी, ब्राह्मण, कन्या ये सभी द्विज हैं। लेकिन विशेष द्विजत्व है गुरु से दीक्षा होना। दीक्षा के बाद आमूलचूल परिवर्तन होता है। गुरु शिष्य को संस्कारित करता है। संस्कार प्रारब्ध को बदलता है। द्विजत्व प्राप्ति के बाद बाहरी परिवर्तन हो ना हो पर अंतर्मन में परिवर्तन तो होता ही है। आस्था हो तो यह पूर्ण सत्य है। गुरु चरण के पास जाने से व्यक्ति ही नहीं, वस्तु ही नहीं, पर्यावरण भी संस्कारित होता है।

देव भविष्य बताते हैं और संकेत करते हैं जैसे ज्योतिषी पंचांग और पत्रिका के माध्यम से करता है। दैवज्ञ केवल भविष्य ही नहीं बताते बल्कि भविष्य पर नियंत्रण भी करना बताते हैं। गुरुचरित्र में अनेक ऐसे प्रसंग है जो देवज्ञ होने को सिद्ध करते हैं।भेषज का मतलब उपचारक है। भगवान शिव विश्व के भेषज हैं। गुरुचरित्र में अनेक कथाएं ऐसी आती है कि साधक का उपचार सद्गुरु के द्वारा होता है। सद्गुरु शिव है और शिव ही सद्गुरु है। गुरु गीता में तो ऐसा सूत्र आया है की एक बार भगवान शिव भी नाराज हो तो गुरु संभाल सकता है पर गुरु रूठे तो कोई शरण नहीं देगा।

अनेक ज्योतिषी और जानकारी कालसर्प के बारे में बताते हैं। कालसर्प की पूजा करते हैं लेकिन यदि हमारे पास गुरु है और वह प्रसन्न हो गया तो कालसर्प भी क्या करेगा? जो गुरु पथगामी हैं, सही अर्थ में सेवक हैं, वही संन्यासी हैं। गुरु सेवक को कुछ सोचने की जरूरत नहीं।गुरु शब्द दो वर्णों से बना है गकार व रकार। गुरु धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि सब कुछ देता है। पर हरेक मंत्र गुरु मंत्र नहीं है। गुरु के मुख से जो बोला गया है वही मंत्र है। क्योंकि उसके साथ गुरु की शक्ति भी प्राप्त होती है। सद्गुरु द्वारा प्रदत्त मंत्र यदि बताई गई विधि से किया जाए तो वह अवश्य फलित होता है। मंत्र तभी उपचारक होता है जब वह गुरु से मिला हो।

ज्ञानेश्वरी गीता में जो कुंडलिनी शक्ति बताई गई है मूलतः वही गुरु शक्ति है। उस शक्ति का अर्जन करने वाला स्पर्श मात्र से अन्य की शक्ति भी जागृत कर सकता है। इसे ही दीक्षा कहते हैं। और जो सर्वशुद्ध होता है वही ऐसा कर सकता है। भक्ति और शक्तिपात का जब समन्वय होता है तब साधक को सही अर्थ में योग प्राप्ति होती है। योगी सामान्य सा लगता है पर मनुष्यत्व उसे कभी बाधित नहीं कर सकता है। मंत्र, तीर्थ, द्विज, देव, देवज्ञ, भेषज और गुरु इन सबको जिस भी भावना से देखेंगे ये वैसे ही फलदाई होंगे।

॥卐॥

गहरी-डुबकी

संत चरणदास जी की शिष्या सहजोबाई की गुरु भक्ति अद्भुत रही है। उन्होंने गुरु भक्ति के अनेक पद रचे हैं। सभी गुरु भक्तों के लिए उनका निम्नांकित पद अति प्रेरक है।

राम तजूं पै गुरु न बिसारूं।
गुरु के सम हरि को न निहारूं।
हरि ने जन्म दियो जग माहीं।
गुरु ने आवागमन छुटाहीं।
हरि ने पंज चोर दिए साथा।
गुरु ने लई छुड़ाय अनाथा।
हरि ने कुटुम जाल में गेरी।
गुरु ने काटी ममता बैरी।
हरि ने रोग भोग उरझायो।
गुरु जोगी करी सबै छुटायो।
हरि ने करम मरम भरमायो।
गुरु ने आतम रूप लखायो।
हरि ने मोसूं आप छिपायो।
गुरु दीपक दे ताहिं दिखायो।
फिर हरि बंध मुक्ति गति लाए।
गुरु ने सबही भरम मिटाए।
चरणदास पर तन मन वारूं।
गुरु न तजूं हरि को तजि डारूं।

- सहजोबाई

॥卐॥

ऊँची उड़ान

साधकों के अनुभव

भारती खानवलकर, ग्वालियर

सद्गुरु सदा साथ हैं

घटना सन 2014 की है तब मेरे पति श्री प्रशांत खानवलकर रेलवे में नौकरी करते थे। उनकी ड्यूटी का समय बदलता रहता था। उस दिन नाइट ड्यूटी थी। बारिश का मौसम था और मूसलधार वर्षा हो रही थी। चारों ओर पानी ही पानी भरा था। सड़कें क्षतिग्रस्त हो गई थीं पर ड्यूटी पर जाना भी आवश्यक था। वे रात को 12:00 बजे अपनी कार लेकर ड्यूटी के लिए रवाना हो गए। भारी वर्षा, जल भराव व रात्रि का समय था इसलिए सुनसान सा ही था। कुछ ही दूर गए होंगे कि कार का ड्राइवर साइड का पहिया सड़क पर बने एक गड्ढे में जा गिरा। गड्ढा काफी बड़ा था। खूब कोशिश की पर गाड़ी उस गड्ढे के बाहर नहीं निकल पाई। स्वयं प्रशांत जी ने उतर कर भी उपाय किए पर निराशा ही हाथ लगी। ड्यूटी पर पहुंचना भी जरूरी था। अंधेरा और जल भराव के कारण भय भी लग रहा था। तभी उन्हें गुरुदेव की याद आई। मुझे फोन करके बताया कि ऐसी स्थिति में फंसा हुआ हूं। मैं भी असहाय थी और मेरा पुत्र भी ऐसी दशा में कैसे जा पाता? वे बोले- भारती, तुम्हारी पुकार गुरुदेव प्रभु बा जल्दी सुनेंगे तुम उनसे प्रार्थना करो ना ! इस बात ने मुझे भी प्रेरित किया कि गुरुदेव तो साथ हैं ही। मुझे कुछ और तो नहीं सूझा पर घर की बालकनी में खड़ी होकर अपने आंचल को फैलाकर करुणा त्रिपदी

का पाठ करने लगी। सद्गुरु का स्मरण और तीन बार के पाठ का यह प्रभाव हुआ कि तीसरे पद के पूर्ण होते ही फिर उनका फोन आया। वे बोले घबराना नहीं गाड़ी निकल गई है। सब ठीक है गुरु कृपा है। मैंने जिज्ञासा भाव से पूछा कि यह कैसे हुआ? प्रशांत जी ने बताया कि तुमसे बात करने के बाद मैं असफल प्रयास कर रहा था पर कुछ भी काम नहीं बना। करीब 1:00 बज गए थे। थोड़ी देर में उस सुनसान सी जगह में न जाने कहां से चार-पांच युवक आए। मेरी स्थिति जानकर वे बोले चलो कोशिश करते हैं। मैं भी गाड़ी को धक्का मारने व उठाने के लिए उनके साथ जाकर खड़ा हुआ तो उनमें से एक ने कहा-अंकल आप बैठो, गाड़ी स्टार्ट करो, हम इसे उठाते हुए धक्का लगाते हैं। उनके प्रयास से चंद सेकंड में ही गाड़ी गड्ढे से बाहर आ गई। मैं गाड़ी को सुरक्षित खड़ी करके उन्हें धन्यवाद देने के लिए उतरा तो देखा कि ना तो वे युवक वहां थे और ना हीं कोई वाहन वहां से जाते नजर आया। ना जाने वे मददकर्ता कहां गायब हो गए? गुरुदेव की कृपा है। यह सुनकर मेरी सांस में सांस आई और सदगुरु देव का धन्यवाद दिया क्योंकि मुझे मालूम था की मदद कहां से आई थी? सद्गुरु सदैव सहाय हैं। ॥卐॥

शब्दों की माला

(साधकों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति)

1. वेदिका बढ़ेर, रायपुर

गुरुदेव तुम्हारे कारण,
हर मुश्किल है आसान।
तुम्हीं तो मेरी धरती,
तुम्हीं हो आसमान।
उड़ रही थी जग में
तिनके सी बेनाम,
रज बनाकर तुमने
चरणों में बसाई।
न जाने क्या देखा
इस अकिंचन में जो,
गुरुकृपा यों बरसाई।
समर्पण की लौ हवा के संग
जूझ रही थी गुरुराया।
तुमने दीपक बना
मुझे अपने दर पे सजाया।
देह समर्पित, चित्त समर्पित।
हृदय का हर स्पंदन समर्पित।
हाथ थाम ले चल सद्गुरु,
तू ही मेरा गुरूर है।
प्रतिपल तेरी आरजू,
तेरी रहमत में डूबी रहूं,
बस यही सुरूर है।

2. श्री विजय पांडे, नागपुर

प्रभु बा की
शीतलता भरी
आंखों से दिव्य दृष्टि
जब हम पर पड़ती है
तो अनुभव होता है
कि गत अनेक जन्मों के
पाप पिघल कर बहने लगे हैं।
वही ऊर्जावान दृष्टि
जब अंतर्मन को भेदकर
गहरे में उतरती है
तो सिद्ध होता है कि
आगे के कई जन्मों के रिश्ते
अंगड़ाइयां लेकर जगे हैं।

3. श्रीमती रागिनी (रानू) चौबीसा, रामनगर

सद्गुरु जब मेरे साथ है।
तो सब उनकी करामात है।
सद्गुरु ही है मेरा गहना।
इनकी कृपा का क्या कहना!
संकटों के काले बादल,
उमड़ घुमड़ भले ही आएं।
इनके आंचल की शरण मिली,
तो क्या बिगाड़ पाएगी घटाएं।
जब से सद्गुरु ने बांह पकड़ी,
खुद हो गई मैं उनके हवाले।
प्रेम पिलाकर निहाल कर दिया,
हर पल वो ही रहे संभाले।
मांगूं तुमसे क्या मैं सद्गुरु,
तुमसे मैं तुमको ही मांगूं।
श्री चरणों की सेवा दे दो,
सेवा में ही सोऊं जागूं।

॥卐॥

रचनात्मकता का आनंद

(साधकों द्वारा निर्मित भावकृतियां)

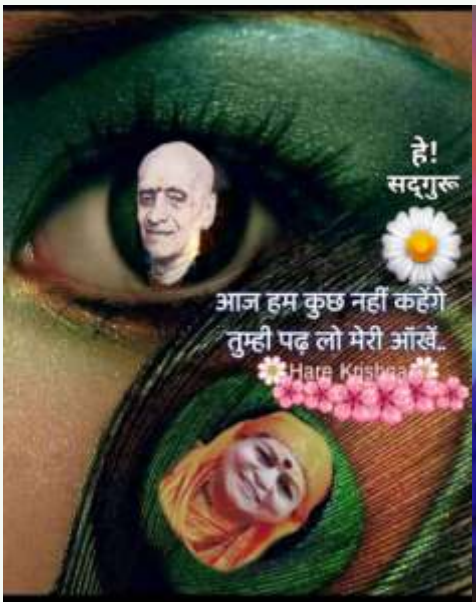

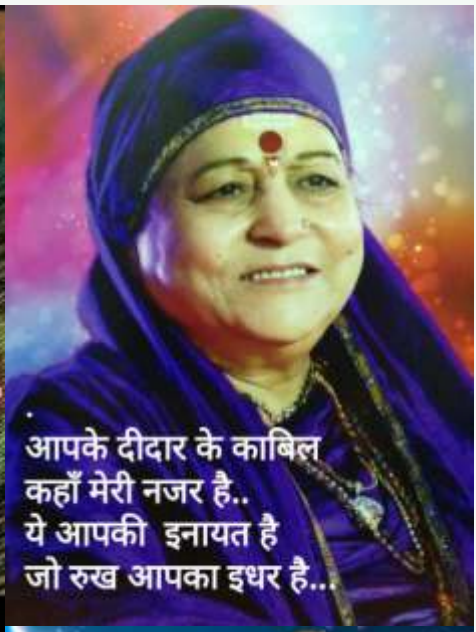

नज़र पड़ी
जो मुझ
पर तेरी।
बदली
नज़रें तब
से मेरी।।

सद्गुरु का
बस यही
मानना।
नाम सुमरना,
ध्यान साधना।।

चाहे हार हो चाहे
जीत हो गुरु चरण में
मेरी प्रीत हो ।सागर
भी तू साहिल भी तू
मझधार और माझी
भी तू ।इस प्रकृति
का तुम गीत हो गुरु
चरण में मेरी प्रीत
हो।दुनिया ये जाने
क्या भला तेरे रूप में
मुझे क्या मिला।तुम
आनंद भरा संगीत
हो गुरु चरण में मेरी
प्रीत हो

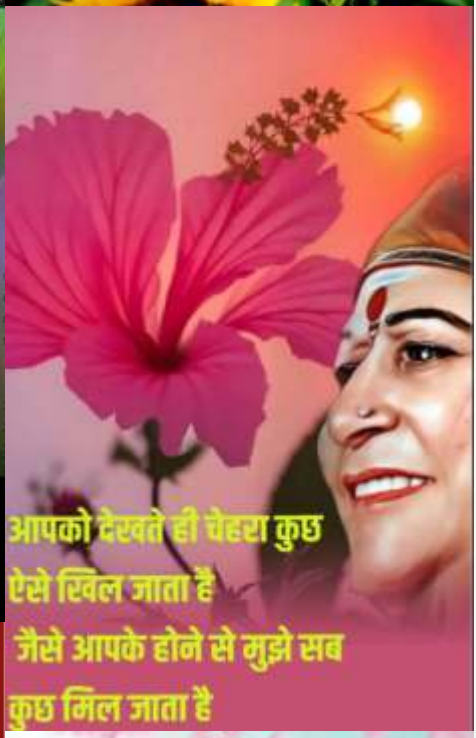
आपको देखते ही चेहरा कुछ
ऐसे खिल जाता है
जैसे आपके होने से मुझे सब
कुछ मिल जाता है

आपको याद करना न करना,
अब मेरे बस में कहां,
दिल को आदत है,
हर धड़कन पे आपका नाम लेने की...।

उन्होंने नस देखी हमारी और बीमार लिख दिया ,
उन्होंने नस देखी हमारी और बीमार लिख दिया ,
हमने रोग पूछा तो सदगुरू से प्यार लिख दिया ।

सम्मतियां
बात कहां तक पहुंची

1. श्री सुशील चन्द्र जी सोनी, बांसवाड़ा

शिव गरिमा इस बार की अद्भुत है, पूना से पधारे संत के विचार क्या है, वो विचाररूपी कयामत है। अगर उनकी क्रियान्विति साधक द्वारा की जाय। उन्होंने सदगुरु का महत्व देह रूप में नही तत्व रूप में स्वीकारा है, क्यों कि शरीरधारी बड़े बड़े महापुरुषों को भी शरीर धर्म निभाना पड़ता है जैसे कृष्ण बुढ़ापे में अपनी पुत्रवधू के हाथ से दूध का कटोरा लेते हैं तो उनका हाथ कांपता है जिसको आजकल हम parkinsan कहते हैं जो बुढ़ापा जनित है, शरीर है तो बुढ़ापा आएगा ही, ये उसका धर्म है। रामजी ने सरयू में जल समाधि ली, समाधि जनित कष्ट उन्होंने भी भोगा। मूल तत्व गुरु तत्व है वो सबसे उपर है। उनका एक और विचार साधन नही तो भोजन नहीं। इस पर हमारे वासुदेव परिवार को बहुत काम करने की जरूरत है, बहुत बार स्वामी दादा ने, गुरुदेव ने बहुत जोर दिया, ध्यान शिविर तक आयोजित हर साल होता है पर इस विषय में कुछ भी कहने के अधिकारी केवल और केवल गुरुदेव ही है, क्योंकि हर साधक की दैहिक, भौतिक और मानसिक स्थिति से वो बखूबी वाकिफ है पर बेहतरीन विचार साधन नही तो भोजन नहीं। सारे विचार उनके अच्छे लगे जो प्रकारांतर से गुरुदेव के ही विचार हैं विस्तार भय से हरेक की व्याख्या संभव भी नही, उचित भी नही। ये मेरे निजी विचार है जो हृदय से सीधा निकला वही लिखा है किसी भी प्रकार से अन्यथा न लिया जाय ये गुरु चरणों में निवेदन। ॥卐॥

2. श्रीमती आभा जी पाल, रायपुर

शिव गरिमा के जून अंक में "सद्गुरु संदेश "में सद्गुरु ने साधना के साथ-साथ सेवा के महत्व को बहुत सुंदर तरीके से समझाया है। सद्गुरु के हाथों में आकर ही हम गढ़े जाते हैं। हमारी गढ़त उतनी ही सुंदर और पूर्ण होगी जितना हमारा समर्पण "सहज अभिव्यक्ति" में इसे सुंदर तरीके से बतलाया गया है! प्रभु बा के अनुभव पढ़ने और सुनने की प्रतीक्षा हमेशा रहती है। परमपूज्य सद्गुरु के अनुभव में गुरुवाणी, दत्त गुरु का आगमन, दिव्य प्रकाश और दर्शन, प्रसाद ग्रहण करना, उपदेश देकर प्रभु बा को सत्संग के लिए बाहर निकलने की प्रेरणा देना यह सब अत्यंत अद्भुत और प्रेरणादायक अनुभव है। "गौरवशाली पल" जिसके हम सब साक्षी भी बने, सद्गुरु प्रभु बा को समारोह पूर्वक प्रदत्त महायोगी भूषण पुरस्कार और परम पूज्य परमहंस श्री लोकनाथ तीर्थ स्वामी महाराज महायोग ट्रस्ट पुणे के अध्यक्ष परम आदरणीय श्री ठकार काका जी के मराठी वक्तव्य का स्वामी हृदयानंद जी द्वारा कृपा पूर्वक हिंदी रूपांतरण किया गया है जिससे सभी गैरमराठी भाषी साधकों को पूरी बात समझ में आ सकी है। उन्होंने प्रभु बा के बाह्य और आंतरिक रूप पर गूढ़ बातें की हैं। प्रभु नामक देह को हम नमस्कार करते हैं ...क्या कभी हमने और आपने प्रभु बा के अंतर्मन में झांकने की कोशिश की है...अगर झांकोगे तो पाओगे कि हर जगह शिव तत्व समय हुआ है।...हम सभी को यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि गुरु कोई एक व्यक्ति नहीं होकर यह तो एक तत्व है।सूर्य का तेज चंद्र की शीतलता व प्रकाश हमारे प्रभु बा में हैं। असाधारण प्रेम के साथ अपने साधकों को उत्थान के मार्ग पर वे ले जाते हैं लेकिन हमें उनके गुरु तत्व को समझना है। यह बहुत अच्छा संदेश उन्होंने दिया है जिसे साधकों को हृदय में उतारना है, समझना है, संजोना है तभी उद्धार संभव है। शिव गरिमा की सभी सामग्री, अपनी मार्ग से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी, सुंदर तस्वीरें, सब कुछ संग्रहणीय है। इतनी अच्छी पत्रिका के लिए हृदय से धन्यवाद और आभार

जय श्री कृष्णा। ॥卐॥

आपकी सहभागिता आमंत्रित

आपको अपने केन्द्र के व्हाट्स एप ग्रुप से हर महीने 'शिव गरिमा ' पत्रिका मिल रही होगी और आप पढ़ भी रहे होंगे। यह पत्रिका अपने आश्रम, शक्तिपात परंपरा व गुरुदेव को समझने में सहायक है। इस लिए वासुदेव कुटुंब के हरेक सदस्य को इसे देखना चाहिए। आपसे निम्नलिखित प्रकार से भागीदारी अपेक्षित है-

1. यदि आपको किसी कारण से यह पत्रिका नहीं मिलती है तो आप इसकी प्रति व स्वर रूप स्वामी गुरुराज से मंगवा सकते हैं। संपर्क फोन - 94147 40814, 83026 94012 है।

2. आप इसे पढ़ सुनकर अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।

3. आप अपना अनुभव, जिज्ञासा आदि भी भेज सकते हैं।

4. साधकों के लिए काव्य व मीम्स के लिए भी प्रकाशन की व्यवस्था है। आप साधना, गुरुदेव या आध्यात्मिक विषयों पर ये बनाकर प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं।

5. भविष्य में और क्या जोड़ा जा सकता है, यह सुझाव दे सकते हैं।

6. अपने साथी साधकों को इसे पढ़ने, सुनने के लिए प्रेषित कर सकते हैं।

7. शिव-गरिमा पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की मान्यता के अनुसार हैं तथा प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही संदेश के उपयोग हेतु हैं।

8. इस पत्रिका की अपने स्तर पर प्रिंट निकाल सकते हैं। विषेश रूप से केन्द्र संचालक एक प्रति केन्द्र पर अवश्य रखें।

9. इस पत्रिका में प्रकाशित फोटो का उपयोग कृपया अन्यत्र बिना अनुमति के न करें।

आशा है यह बात यथा भाव आप तक पहुंचेगी।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित काशी शिवपुरी आश्रम, ईंटालीखेड़ा, तहसील-सलुम्बर, जिला-सलुम्बर (राज.) से प्रकाशित 'शिव-गरिमा' ई-मासिकी, निः शुल्क।

संपादक : स्वामी गुरूराज,
मार्गदर्शक : गुरूपुत्र दत्तप्रसाद एवं स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा),
ग्राफिक्स: प्रमोद सोनी, स्वर: संजय शुक्ला

संपर्क सूत्र -आश्रम : 9929681423,
स्वामी दादा: 9950502409 स्वामी गुरूराज : 9414740814

शिव गरिमा के सभी
pdf और audio files के लिए
QR Code Scan करें

www.prabhubaa.com,
Prabhu Baa App